Tel. : 9342254131

ओ३म्

Email : aryasamajmarathalli@yahoo.co.in
www.bangalorearyasamaj.com

स्वामी दयानन्द सरस्वती

आर्य ज्योति
ARYA JYOTI
ಆರ್ಯ ಜ್ಯೋತಿ

March-2025

Arya Samaj Marathalli Monthly Newsletter

Sunday Weekly Satsang : 10.00 a.m. to 11.30 a.m.

महाशिवरात्रि एवं आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का गहरा नाता है

महाशिवरात्रि का पर्व हमें सच्ची ईश्वर भक्ति और सत्यता की प्रेरणा देता है – फकीरे दयानन्द श्री एस.पी. कुमार

शिवरात्रि और आर्य समाज के बीच एक विशिष्ट सम्बन्ध है क्योंकि आर्य समाज एक सुधारवादी संगठन है, जो समाज में फैली हुई कुरीतियों के खिलाफ आन्दोलन के कारण जाना और पहचाना जाता है। इसकी स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वर्ष 1875 में की थी। आर्य समाज वेदों को सर्वोच्च धार्मिक ग्रंथ मानता है तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा दिखाये मार्ग पर चलकर पूरी मानवता के कल्याण की भावना से कार्य करता है। आर्य समाज किसी धर्म–सम्प्रदाय या मजहब का नाम नहीं है। बल्कि यह विश्व का सर्वश्रेष्ठ संगठन है जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से संसार के उपकार की बात करता है। यह संगठन सदैव से मानव–मानव में भेद नहीं करता अपितु पूरी मानवता के कल्याण के लिए तन–मन–धन से कार्य करता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का शिवरात्रि के दिन से गहरा नाता है। इसी दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को वैराग्य हुआ था। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म 1824 में गुजरात प्रान्त के टंकारा ग्राम में एक पौराणिक परिवार श्री कर्षण तिवारी जी के यहाँ हुआ था। बचपन में वे भी परिवार के साथ अन्य लोगों की तरह शिवरात्रि के अवसर पर व्रत किया करते थे और शिव की पूजा–अर्चना करते थे। परन्तु वे जब कुछ बड़े हुए और एक बार शिवरात्रि के दिन उन्होंने देखा कि मंदिर में स्थापित शिवलिंग के पास एक चूहा घूम रहा है और शिवलिंग पर चढ़ गया और चढ़े हुए प्रसाद आदि खाद्य पदार्थों को खाने लगा। इससे उनके मन में संदेह हुआ कि यदि यह सच्चे शिव स्वयं भगवान हैं, तो ये अपने ऊपर चढ़े चूहे को क्यों नहीं हटा सकते? इस घटना ने बालक मूलशंकर (स्वामी दयानन्द) के मन में संदेह उत्पन्न किया और उसके पश्चात वह बालक मूलशंकर (स्वामी दयानन्द) सच्चे शिव यानि सत्य की खोज में निकल पड़े।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज सदैव से वेदों के अनुसार जीवन जीने पर बल देता है एवं अन्धविश्वास तथा सामाजिक बुराईयों का विरोधी रहा है। आर्य समाज के अनुयायी शिवरात्रि को पारंपरिक रूप से मनाने के बजाय ईश्वर की उपासना, योग और यज्ञ के माध्यम से मनाते हैं। शिव को एक विशेष देवता के रूप में न मानकर उसे "कल्याणकारी" अर्थ में लेते हैं, क्योंकि वेदों में "शिव" शब्द का अर्थ ही "कल्याणकारी" बताया गया है।

आर्य समाज शिवरात्रि को ईश्वर उपासना और आत्मचिंतन के रूप में मनाता है। शिवरात्रि के दिन विशेष यज्ञ, भजन, वेद पाठ और सत्संग का आयोजन करके जन–जागृति पैदा करने का कार्य करता है। आर्य समाज के अनुसार, वास्तविक "शिव" कोई मूर्ति नहीं, बल्कि ईश्वर का निराकार स्वरूप है, जिसे ध्यान–साधना और सच्चे कर्मों से पाया जा सकता है।

शिवरात्रि का आर्य समाज के इतिहास में विशेष महत्व है, क्योंकि इसी दिन आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जीवन को एक नया मोड़ दिया था। आर्य समाजी इस दिन को अंधविश्वास से अलग रहकर, वेदों के अनुसार, सच्ची ईश्वर भक्ति और आत्म चिन्तन के रूप में मनाते हैं।

हमारे सत्संग

वेद कहता है पति–पत्नी को सखा बनकर रहना चाहिए

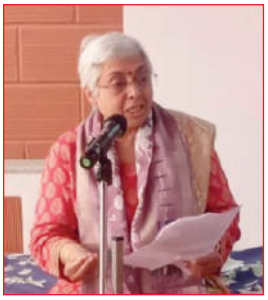

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर के रविवारीय सत्संग में दिनांक 2 फरवरी, 2025 को आर्य समाज मारतहल्लि की कार्यकारिणी की सदस्या श्रीमती उत्तरा नेरूर्कर जी ने ईश्वरोपासना के प्रथम मंत्र पाठ के साथ प्रारम्भ किया। अर्थववेद के एक सूक्त का वर्णन करते हुए कहा कि परिवारजन कैसे सुखी रहें इसका सुन्दर विवरण अथर्ववेद के तीसरे कांड के तीसरे सूक्त में मिलता है। स्वामी दयानन्द जी ने इसकी 'संस्कारविधि' में भी बहुत सुन्दर व्याख्या की है। परमात्मा ने एक दूसरे को प्रेम से रहने वाला बनाया है, एक मन वाला बनाया है। परिवारों में यदि एक लक्ष्य की ओर पति–पत्नी और परिवार बढ़ते हैं तो वे उस लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं। परिवार में एक–दूसरे के प्रति प्रेम निःस्वार्थ भाव से होना चाहिए। जैसे बछड़े के प्रति गाय माता का होता है। दूसरे मंत्र को विस्तार से बताते हुए कहा कि पुत्र, पिता की आज्ञा माने और माता के मनःस्थिति को समझे और बड़ों का सम्मान करें। उन्होंने कहा कि जब बच्चे बड़े हो जाते हैं तो हमें उनके विचारों का भी सम्मान करना चाहिए। परिवारों में लोग भले ही अलग–अलग विचार रखते हों परन्तु उस पर विवाद नहीं करना चाहिए। आपस में मिल–बैठकर फैसला लेने का निर्णय करना चाहिए। पत्नी को चाहिए कि अपने पति के साथ प्रिय वचन बोले, क्योंकि पति जगह–जगह की झुंझलाहट से थका हारा घर आता है तो पत्नी की जिम्मेदारी होती है कि वह अपने पति को अपने प्रिय वचनों से उसका मनोबल बढ़ाये। यह विचारणीय है कि पति के लिए ही ऐसा क्यों कहा गया है तो उसका यही कारण है कि हमारे देश में पहले पति ही बाहर के कार्य किया करते थे। तीसरे मंत्र को बोलते हुए कहा कि भाई को भाई से दुश्मनी नहीं रखनी चाहिए, बहन और भाई में भी प्रेम होना चाहिए। हम अक्सर देखते हैं कि भाई–भाई की झड़प होती रहती है और बहन की बहन से झड़प होती रहती है। भाई–बहन की झड़प कम देखने को मिलती है। कई बार भाई–बहन के विचारों में भी मतभेद हो जाता है। परन्तु वेद हमें सिखाता है कि प्रत्येक भाई, बहन को आपस में प्रिय वचन बोलते हुए अच्छे व्यवहार के साथ जीवनयापन करने का प्रयास करना चाहिए।

विद्वत्जन हमेशा वेद के मार्ग पर चलते हैं और वेद के निमयों का पालन करते हुए समाज में जीवन–यापन करते हैं। इसलिए हम सभी को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और वेद मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें एक–दूसरे से प्रेम और सद्भाव से बातचीत करनी चाहिए। वेद हमें एक–दूसरे के प्रति प्रेम से रहने की प्रेरणा देते हैं। कोशिश यह करनी चाहिए कि बाहर की कड़वाहट बाहर ही छोड़ आयें, जब घर में प्रवेश करें तो प्रेम भरी मीठी वाणी ही बोलें। परिवार के सदस्यों को एक साथ बैठकर भोजन करना चाहिए और एक ही प्रकार के भोजन करने चाहिए इससे आपस में प्रेम बढ़ता है। परिजनों को दिनभर में कम से कम एक बार साथ मिल–बैठकर अवश्य ही भोजन करना चाहिए। वेद का मन्त्र यह कहता है कि तुम अपने काम भले ही अलग–अलग करते हो, परन्तु तुम्हें कुछ काम साथ–साथ ही करने होते हैं। दम्पत्ति को एक साथ बैठकर बच्चों सहित अग्निहोत्र करना चाहिए। प्रातः एवं सायं परमात्मा का ध्यान–साधना अवश्य करनी चाहिए। मोक्ष की प्राप्ति के लिए भौतिक कार्यों के साथ–साथ ईश्वरोपासना अवश्य करनी चाहिए। परमात्मा के ध्यान–साधना से ही मानसिक शांति और प्रगति होती है। सांसारिक दायित्वों को पूरा करते हुए मोक्ष की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहना चाहिए।

वेद मन्त्र के माध्यम से पति–पत्नी के बीच विचार मतभेद के सम्बन्ध को बताते हुए कहा कि जिस प्रकार से धनुष की प्रत्यंचा तनी होती है तो ऐसी स्थिति में बाण उतारकर रख देना चाहिए। ठीक उसी प्रकार से जब पति–पत्नी में से कोई एक गुस्सा हो जाये तो दूसरे को चाहिए कि प्रेम से उसे समझा ले और उसके क्रोध को शान्त कर दे। वेद में पति–पत्नी के सम्बन्ध में कहा गया है कि तुम पति–पत्नी के साथ–साथ सखा हो। जब तुम दोनों एक–दूसरे को मित्र की तरह समझोगे तो पूरे परिवार में सुख–शांति होगी।

आनन्दमय जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर के रविवारीय सत्संग में दिनांक 9 फरवरी, 2025 को श्री अनिल आर्य, बंगलौर ने गायत्री मन्त्र के उच्चारण के साथ अपना प्रवचन देते हुए कहा कि यदि आप ईश्वर के निकट जाने की इच्छा रखते हैं तो ईश्वर की उपासना करना आवश्यक है। मनुष्य को मोक्ष तभी मिलेगा जब वह ईश्वर के समीप जायेगा। इसका मुख्य साधन ईश्वरोपासना है। उन्होंने कहा कि जिस किसी को भी ईश्वर से मिलना है, वह एकान्त में चले जायें और वहां पर जाकर आसन लगाकर ईश्वर की भक्ति करें। इस सम्बन्ध में वेदान्त दर्शन में विस्तार से बताया गया है।

महर्षि कपिल जी ने सांख्य दर्शन में कहा है कि ध्यान–साधना बहुतों के साथ रहकर नहीं किया जा सकता, क्योंकि बहुत लोगों के साथ रहने के कारण राग–द्वेष के कारण संघर्ष बना रहता है जो आपको उपासना से अलग कर देता है। इसका मुख्य कारण है कि ईश्वर से मिलने का सभी के भिन्न–भिन्न विचार है। इसलिए एकान्त में जाकर ही यह सिद्धि प्राप्त हो सकती है। महर्षि कपिल ने कहा है कि दो लोग भी एक साथ बैठक उपासना नहीं कर सकते, क्योंकि दो लोगों के भी आपस में विचार नहीं मिलते। यहाँ तक कि पति–पत्नी भी साथ बैठकर उपासना करके ईश्वर की प्राप्ति नहीं कर सकते, क्योंकि उनके भी विचार भिन्न–भिन्न होते हैं।

जब हम अकेले हों और ईश्वर से मिलने की इच्छा रखते हैं तो इस सम्बन्ध में महर्षि कपिल जी कहते हैं कि जब ईश्वर से एकान्त में मिलने की इच्छा हो तो किसी से सुख–सुविधा की आशा नहीं करनी चाहिए। स्त्रियों में यह अधिक देखा जाता है कि वह अपने स्वजनों के साथ–साथ परिजनों की भी सुख–सुविधा का ध्यान रखती हैं। परमात्मा ने महिलाओं में यह एक विशेष गुण दिया है। महर्षि कपिल जी कहते हैं कि जब हम ईश्वर से मिलने की इच्छा करें तो किसी स्वजन या परिजन की चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

परमात्मा से मिलने के लिए हमें सुबह और शाम दोनों समय एकान्त में बैठकर ध्यान–साधना करनी चाहिए। इस प्रकार से जब हम अपने जीवन में करते हैं तो हमें जो चिन्ता या कष्ट दिखाई देता है उससे निजात मिलती है। सभी को प्रतिदिन आसन लगाकर प्राणायाम करते हुए ईश्वर की प्राप्ति की इच्छा करनी चाहिए।

महर्षि दयानन्द जी ने कहा है कि गृहस्थियों को प्रतिदिन कम से कम 24 मिनट ध्यान–साधना अवश्य करनी चाहिए। जिस किसी को भी ईश्वर में रुचि हो उन्हें ब्रह्म मुहुर्त में उठकर ईश्वर की ध्यान–साधना करनी चाहिए। गृहस्थियों को विशेष रूप से यह ध्यान रखना चाहिए कि यदि आप परिवार के संघ रहते हैं तो आपको परिवार के अन्य सदस्यों से पहले ही उठ जाना चाहिए। श्री अनिल आर्य ने अपना अनुभव बताते हुए कहा कि मैं अपने परिवार में पत्नी और एक बेटी के साथ रहता हूँ, परन्तु हमने यह नियम बनाया हुआ है कि सुबह सोकर उठने के बाद एक घण्टे तक मौन व्रत रखते हुए पूर्ण शांति के साथ ध्यान–साधना में रहते हैं और परमात्मा का ध्यान करते हैं। इसमें हमारी पत्नी का भी पूरा सहयोग हमें प्राप्त होता है।

हम सभी आर्य समाज के प्रथम नियम को पढ़ते हैं जिसमें स्पष्ट बताया गया है कि ईश्वर ही हमें सबकुछ प्राप्त कराता है। यदि इस नियम से भी हमारा चित्त शुद्ध नहीं होता है तो हमें इस पर विशेष चिन्तन–मनन करके समझने की आवश्यकता है। जब हमारे चित्त शुद्ध होंगे तभी उपासना में मन लगेगा। उन्होंने कहा कि मनुष्यों की तीन श्रेणी होती है – मंद, मध्यम और उत्तम। जो मंद हैं उन्हें मध्यम की ओर बढ़ना चाहिए और जो मध्यम हैं उन्हें उत्तम की ओर बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

कर्म दो प्रकार हैं – सकाम कर्म और निष्काम कर्म। जिस कर्म में फल की इच्छा होती है उसे सकाम कर्म कहते हैं और जो कर्म बिना किसी इच्छा के किये जाते हैं उसे निष्काम कर्म कहते हैं। मनुष्य और देवता में यह भेद है कि मनुष्य झूठ बोलता है और देवता सत्य बोलते हैं। उत्तम मनुष्य सत्य बोलते हुए अपने कर्म करते हैं क्योंकि उन्हें ईश्वर के बारे में पता है।

महर्षि दयानन्द जी कहते हैं जैसे माता उत्पन्न हुए बालक को शीघ्र शुद्ध करके उसकी रक्षा करती है और उसे ऐश्वर्य एवं सुविधा प्रदान करती है, उसी प्रकार जो अपने मन को योगाभ्यास के माध्यम से चित्त को शुद्ध करके ईश्वर में मन लगाते हैं वे भी ऐश्वर्य की प्राप्ति करते हैं। योग का अर्थ है मन पर जो चित्त वृत्तियाँ आ रही होती हैं उन्हें रोकना। अभ्यास का अर्थ है मन को समुद्र जैसा शान्त करने का अभ्यास करना। योगी वही है जो अपने समस्त कार्यों को परमात्मा को समर्पित करके करते हैं। ईश्वर ऐसे लोगों को अपने प्रकाश से प्रकाशित करते हैं। मोक्ष की प्राप्ति को ही हम स्वर्ग कहते हैं। हम सभी को वैसे ही ईश्वर की ध्यान–साधना करनी चाहिए जिस प्रकार से हमारे ऋषि–मुनियों ने अपने आपको ईश्वर की ध्यान–साधना में लगाया। मनुष्य को ज्ञानेन्द्रिय, बुद्धि एवं ईश्वर के माध्यम से चित्त पर प्रज्ञा के आलोक के माध्यम से ही ज्ञान प्राप्त होता है।

सुख के भी कई साधन हैं – इन्द्रिय सुख अर्थात् किसी को छूना, किसी को देखना अच्छा लगता है। यह निम्न स्तर का सुख है। विद्या प्राप्ति का सुख अर्थात् किसी को जानना हो तो हमें उसके विषय को समझने चाहिए जैसे गेंद को उछालकर हम देखते हैं कि पृथ्वी के अन्दर गुत्तवाकर्षण है जिस कारण से गेंद नीचे आ जाती है। तीसरा सुख है चित्त प्रसाधनम इस सुख की प्राप्ति उत्तम कोटि के मनुष्यों को ही मिल सकता है जो आत्मा और बुद्धि को अधर्माचरण से धर्माचरण में लगाते हैं, अपनी इन्द्रियों को बुराई से हटाकर अच्छाई में ही लगाते हैं। बुरे लोगों से अपने आपको अलग करके कार्य करते हैं ऐसे लोग चित्त प्रसाधनम वाली सुख की श्रेणी में आते हैं। एक उदाहरण देते हुए कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी को जब वन गमन की सूचना मिली तो वे उसी तरह से प्रसन्न थे जैसे वे पहले प्रसन्नचित्त मुद्रा में थे। इसी प्रकार योगीराज श्रीकृष्ण जी के पुत्र प्रद्युम्न का बध होने वाला था परन्तु योगीराज श्रीकृष्ण जी सुबह–सुबह उठकर उनके साथ बैठकर हवन करते हैं और प्रसन्नचित्त रहते हैं, जबकि उन्हें पता था कि प्रद्युम्न का वध होने वाला है। योग दर्शन में मनुष्य मनः दशा का सुन्दर वर्णन किया गया है।

कर्म भी तीन प्रकार के होते हैं – कर्तुम, अर्कतुम, नर्कतुम। कर्तुम का अर्थ जो कर्म कर रहा है। अर्कतुम का अर्थ है जो कर्म नहीं कर रहा है। नर्कतुम का अर्थ है जो कर्म ही नहीं करना चाहता।

अग्नि अन्धकार और शीत से निवृत्ति देती है। अन्धकार स्वाभाविक है। प्रकाश को लाया जाता है अन्धकार को हटाने के लिए। इसी प्रकार से मनुष्यों में जो अज्ञान है वह स्वाभाविक है, अज्ञान को दूर करने में उपासना सहायता करती है। जो शीत है वह बाहर की चीजों से निर्मित होती है, लेकिन जब हम अग्नि के समीप जाते हैं तो शीत की निवृत्ति हो जाती है। शीत हमें दुःख देती है लेकिन जब अग्नि के पास जाते हैं तो हमें उस शीत से मुक्ति मिल जाती है। इसी प्रकार जब व्यक्ति उपासना करता है तो उसके अन्दर जो मलीनता रूपी शीत है वह नष्ट हो जाता है।

मनुष्य के अन्दर मनु महाराज जी द्वारा बताये गये धर्म के दस लक्षण होने आवश्यक हैं, जिसके अन्दर दसों गुण होते हैं वही धर्म पुरुष है। ईश्वर गुण, कर्म और स्वभावों का ज्ञान कराता है और धर्म का भी ज्ञान देता है। ईश्वर धर्म और विद्या का ज्ञान देता है। उन्होंने कहा कि जब हम ईश्वर के शरण में जाते हैं तो धीरे–धीरे राग, द्वेष, क्लेश कम होते चले जाते हैं। हम सभी को धर्मयुक्त आनन्दमय जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

श्री वाई.एन. राव जी का जीवन यज्ञमय रहा

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर के रविवारीय सत्संग में दिनांक 16 फरवरी, 2025 को वैदिक विद्वान् श्री रवि भटनागर जी ने कहा कि आज साप्ताहिक सत्संग में हम सभी आर्य समाज मारतहल्लि के सदस्य यज्ञीय आर्य पुरुष श्री वाई.एन. राव जी के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए उपस्थित हुए हैं। स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण सशरीर उपस्थित नहीं हो सका इसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

महाभारतकाल की एक घटना बताते हुए कहा कि जब पाण्डवों को प्यास लगी तो सबसे पहले छोटे भाई को पानी लेने के लिए भेजा गया, जब छोटा भाई पानी लेने गया तो यक्षराज ने प्रश्न किया परन्तु उत्तर दिये बिना जल लेने की कुचेष्ठा के कारण मूर्छित हो गये इसी तरह से एक–एक करके चार भाई मूर्छित हो गये और अन्त में चारों भाईयों में किसी के वापस न आने पर बड़े भाई युधिष्ठिर स्वयं भागे–भागे गये तब उन्होंने देखा कि सभी भाई मूर्छित पड़े हैं तो उन्होंने सवाल किया यह सब किसने किया जो हो वह सामने आयें। उनकी आवाज को सुनकर यक्षराज सामने आये और उन्होंने कहा कि यदि हमारे प्रश्नों का उत्तर दिये बिना यदि तुम भी पानी लेने की कुचेष्टा करोगे तो तुम्हारा भी यही हाल होगा और यदि हमारे प्रश्नों का उत्तर दे दोगे तो तुम्हारे चारों भाईयों को भी जीवित कर दूंगा और फिर इस सरोवर का पानी भी ले सकते हो। युधिष्ठिर यक्षराज के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए तैयार हो गये और एक–एक प्रश्नों का उत्तर देकर अपने भाईयों को जीवित करा लिया।

जीवन मृत्यु के सम्बन्ध में कहा कि – वासांसि जीर्णानी यथा विहाय.....। जिस तरह से हम फटे पुराने कपड़े को त्यागकर नये कपड़े धारण कर लेते हैं उसी प्रकार जीव जीर्ण–शीर्ण शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में प्रवेश कर जाता है। उन्होंने कहा कि यह भी बात सत्य है कि कई बार लाखों लोगों के जन्म के बावजूद भी किसी एक व्यक्ति के चले जाने की पूर्ति नहीं हो पाती। समाज में रहने वाला कोई भी व्यक्ति हो कितना ही गीता आदि ग्रन्थ पढ़ा हो परन्तु अपने स्वजनों के जाने पर उसे कष्ट हो ही जाता है। ऐसी स्थिति में हमें परमात्मा से प्रेम बढ़ाना चाहिए उससे निश्चित रूप से ही हमारा दुःख कम हो जाता है। जब हमारे किसी स्वजन की मृत्यु हो जाती है तो हम परमात्मा से ही प्रार्थना करते हैं कि हमें शक्ति प्रदान करें, क्योंकि वही सर्वशक्तिमान है।

आज हम सभी यज्ञीय आर्य पुरुष श्री वाई.एन. राव जी के कार्यों को याद करके भाव–विभोर हो रहे हैं। निश्चित रूप से उनका जीवन पूर्ण रूप से यज्ञीय था, परमपिता परमात्मा निश्चित रूप से ही उन्हें कोई अच्छा कार्य करने का दायित्व देंगे। आज हम सभी को उनके द्वारा किये गये कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर रहना चाहिए। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें।

इस अवसर पर राजस्थान से पधारे श्री श्रद्धानन्द शास्त्री जी ने भी जन्म मृत्यु के सम्बन्ध में अपने विचार रखते हुए कहा कि ईश्वर हमें मनुष्य योनि इसलिए प्रदान करते हैं कि हम अपने जीवन में अच्छा कार्य कर सकें। उन्होंने कहा कि पुत्र वही है जो अपने पिता के नाम को रोशन करे। अपने पिता द्वारा किये गये कार्यों को आगे बढ़ाये। समाज में आजकल कई बच्चे ऐसे कुसंस्कारी हो रहे हैं जो अपने माता–पिता का अनादर करते रहते हैं। कई बूढ़े माता–पिता की आपबीती को बताते हुए उन्होंने सभी को भाव विह्वल कर दिया।

श्री शास्त्री जी ने कहा कि श्री वाई.एन. राव जी का पूरा जीवन यज्ञमय था। आज यहाँ उनके सुपुत्र एवं परिवारजन भी उपस्थित हैं। उन सभी को अपने पिता को स्मरण करते हुए उनके कार्यों को आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। जो लोग अपने माता–पिता, पूर्वजों एवं महापुरुषों के कार्यों को आगे बढ़ाते हैं वे निश्चित रूप से ही पुण्य के भागी बनते हैं। हम सभी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि श्री राव राहब जी की आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें।

इस अवसर पर अनेक वक्ताओं ने भी श्री राव साहब जी के प्रति अपनी–अपनी ओर से श्रद्धांजलि देते हुए उनके प्रति अपने उद्गार व्यक्त किये।

सच्चा सुख और आनन्द ईश्वर भक्ति से ही प्राप्त होगा

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर के रविवारीय सत्संग में दिनांक 23 फरवरी, 2025 को फकीरे दयानन्द श्री एस.पी. कुमार जी ने कहा कि इस समय महाकुम्भ का आयोजन चल रहा है। इसे देखकर हमारे मन में अनेक धारणाएँ पैदा होती हैं। हमारे देश में अनेक मत–मतान्तर हैं, अनेक संगठन बने हुए हैं। हमें यह भी अवश्य विचार करने की आवश्यकता है कि यह महाकुम्भ कैसे हुआ, इसमें हमारे ऋषि–मुनियों का भी योगदान रहा होगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनन्य भक्त लोकमान्य तिलक जी ने जब पहली बार महाराष्ट्र में इसी प्रकार से गणेश पूजा का आयोजन किया था तो उसका भी उद्देश्य यही था कि लोगों में धार्मिक आयोजन करके जन–जागृति की चेतना पैदा की जाये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने उस समय के परिप्रेक्ष्य के अनुरूप महाकुम्भ में पाखण्ड–खण्डिनी पताका को फहराया, क्योंकि उस समय देश की परिस्थिति अलग थी। समाज में अनेक कुरीतियाँ व्याप्त थीं, जैसे– महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार नहीं था, शूद्रों के प्रति समाज में दुर्भावनाएं थी। इसी प्रकार की अनेक कुरीतियाँ थीं जिसको लेकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आन्दोलन खड़ा किया और वह उस समय की मांग थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों को धीरे–धीरे समाज में लागू किया गया और आज महिलाओं की दिशा और दशा में काफी सुधार है।

आज के महाकुम्भ के आयोजन में भी लोगों की आस्था है और कहीं उससे भी अधिक राजनीति का पुट है। आज परिवारों में भी

लोग बंटे हुए हैं। एक ही परिवार में लोगों की भिन्न–भिन्न मान्यताएं हैं। आज जिस तरह से दिखाया जा रहा है कि 60 करोड़ से अधिक लोगों ने आस्था की डुबकी महाकुम्भ में लगाई है। इसका मतलब यह नहीं है कि सभी लोग किसी संगठन से सम्बन्धित हैं। इसमें यह सिद्ध करने का प्रयास किया जा रहा है कि हम सभी एक हैं। पूरी दुनिया को भी यह दिखाने का प्रयास किया जा रहा है कि हम सभी एकजुट और एक हैं। संगठन की भावना से देखें तो हम सभी के लिए भी अच्छा है। परन्तु यदि राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो यदि हम सभी एक नहीं होते हैं तो भी अच्छा नहीं होगा। कोई अपने पाप धोने की इच्छा से गया, तो कोई आस्था के हिसाब से गया, कोई अध्यात्म की भावना से गया। जिस भी उद्देश्य से गये हों वह उद्देश्य पूरा हो या न हो, लेकिन इससे यह सिद्ध होता है कि हम सभी संगठन की दृष्टि से एक हैं। इतनी भीड़ को देखकर मोदी जी एवं भाजपा के नेताओं को आत्म संतोष हुआ होगा कि हम सभी एक हैं।

इस महाकुम्भ में ऐसे–ऐसे लोग भी गये जो कभी एक गिलास पानी भी स्वयं नहीं लेते, परन्तु आस्था की डुबकी लगाने के हिसाब से गये। दूसरी दृष्टि से हमें यह विचार करना है कि क्या हमारे डुबकी लगाने से हमारे पाप धुल जायेंगे? क्या हमें मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है? इस पक्ष में हमारा स्पष्ट मत है कि हम मोक्ष के अधिकारी तभी बन सकते हैं जब हम अपने ज्ञान के माध्यम से कर्म करेंगे और लोगों के परोपकार की भावना से अच्छे कर्म करते हुए अपना जीवनयापन करेंगे। ईश्वर हमें जन्म देता है कि जाओ तुम कर्म करो और अपने मोक्ष की प्राप्ति के लिए कार्य करो। इसके लिए अनेक प्रकार के धार्मिक आयोजन करते हैं और यज्ञ कार्य करते हैं। परन्तु आजकल यह भी देखने को मिलता है कि अनेक धार्मिक आयोजनों में चलचित्र गानों के तर्ज पर भजन चलाकर डांस होते हैं जिसमें महिलाएं और लड़कियाँ भी बेसुध होकर नाचती हैं और वे आनन्द महसूस करती हैं। जबकि वह ईश्वर की भक्ति का वास्तविक आनन्द नहीं है। भौतिक वस्तुओं से मिला हुआ आनन्द अस्थाई है, यह आनन्द की श्रेणी में नहीं आता। आनन्द का विषय आत्मा से जुड़ा होता है। योग एवं साधना के अनुसार जब हम अपने आत्मा के साथ जुड़ते हैं तो हमें उससे सच्चे आनन्द की प्राप्ति होती है। साधना बहुत बड़े तप का विषय है।

ईश्वर की प्रत्येक व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है, उसमें किसी भी प्रकार का व्यवधान नहीं उत्पन्न होता है। ईश्वर आनन्दमय है, ईश्वर के कार्यों में हमें कोई कमी नहीं नजर आती, यदि हमें कमी नजर आती है तो यह हमारा अज्ञान ही है। महर्षि दयानन्द जी ने कहा है कि पहले अपने अज्ञान और असत्य के मार्ग से हटोगे तभी ईश्वर की अनुभूति कर सकते हो। उन्होंने कहा कि यदि हमें दवाई लेनी है तो हलवाई के दुकान पर नहीं मिलेगी उसके लिए हमें दवाई की दुकान पर जाना होगा, उसी प्रकार सच्चा आनन्द प्राप्त करने के लिए हमें ईश्वर से जुड़ना होगा तभी हमें सच्चा सुख मिल सकता है।

भौतिक वस्तुओं से जो हमें सुख प्राप्त होता है वह स्थाई नहीं होता। स्थाई सुख तो परमात्मा की भक्ति से ही मिलता है। जिस प्रकार पानी के पास जाते हैं तो शीतलता प्राप्त होती है, अग्नि के पास जाते हैं तो उष्मा प्राप्त होती है। उसी प्रकार परमपिता परमात्मा से मिलने के लिए हमें अपने अन्दर झांकना होगा जो हमें बोलने की शक्ति देता है, सुनने की शक्ति देता है। इसलिए हमें आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध में साधना और तप करके सच्चे सुख की प्राप्ति के लिए तपस्या करनी चाहिए।

हमारे जितने महापुरुष हुए उन सभी ने अपने अन्दर झांका और ईश्वर की प्राप्ति के लिए कार्य किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी जब प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द जी महाराज के पास गये तो प्रज्ञाचक्षु ने पूछा था कि कौन! तो इस पर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने कहा कि यही तो जानने आया हूँ कि मैं कौन हूँ। ऐसे महापुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कहते हैं कि आपको सबसे पहले प्रातः ईश्वर को नमन करते हुए उसका धन्यवाद करना चाहिए, जिसने आपको मनुष्य योनि प्रदान की है, ईश्वर के प्रति हमेशा कृतज्ञ रहो। यदि मनुष्य योनि प्राप्त करके भी आन्तरिक प्रसन्नता नहीं रहती है तो आप ईश्वर को कभी भी प्राप्त नहीं कर सकते।

माता–पिता के प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए। माता–पिता के रूप में दो रत्न हमें मिलते हैं उन्हें ईश्वर ही प्रदान करता है। आप कल्पना करें कि यदि ईश्वर माता–पिता रूपी संरक्षक न प्रदान करे तो कोई भी नन्हा बच्चा कैसे पल सकता है।

इसी प्रकार स्वास्थ्य के लिए आहार–विहार भी संतुलित होना आवश्यक है। क्योंकि आहार से ही हमारे विचार बनते हैं। यदि अच्छा आहार नहीं होगा तो हमारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा और हम अपने उद्देश्य की पूर्ति कर पाने में सक्षम नहीं हो सकेंगे।

हमारी सोच सकारात्मक होनी चाहिए, यदि हमारी बुद्धि सकारात्मक होगी तो हम सही कार्य कर पायेंगे। यदि हमारे विचार नकारात्मक होंगे तो हम डिप्रेशन में भी जा सकते हैं। आत्मा ही हमारी शक्ति है। हमारे शरीर को चलाने के लिए आत्मा ही हमें ऊर्जा प्रदान करती है, शक्ति देती है। हमें स्वाध्याय के माध्यम से, अच्छे–अच्छे विचारों एवं सत्संगों से अपनी शक्ति बढ़ानी चाहिए। इन सभी से जो हमें प्रेरणा मिलती है उससे हमारी आत्मा को प्रोत्साहन मिलता है। इसलिए हमें अपनी शक्ति का प्रयोग हमेशा सकारात्मकता में लगाना चाहिए।

हम सभी को अपने जीवन में पवित्र कमाई करनी चाहिए और अपने उद्देश्यों की पूर्ति के साथ–साथ लोगों के परोपकार के कार्यों में भी कुछ खर्च करना चाहिए। यदि किसी निर्धन को आवश्यकता है, जरूरतमंद व्यक्ति को आवश्यकता है, किसी रिश्तेदार को आवश्यकता हो तो उसकी सहायता करनी चाहिए। यह धन कभी भी किसी एक का होकर नहीं रहता है। इसलिए परोपकार के कार्य की भावना हमेशा रखनी चाहिए। हमारा जीवन अभय होना चाहिए। यदि आप कभी भी भय में रहेंगे तो कभी भी आनन्द प्राप्त नहीं कर सकते। आप सभी ने अनुभव किया होगा कि कभी–कभी अपना मित्र भी शत्रु बन जाता है। इसमें कहीं न कहीं आपसी व्यवहार की कमी ही होती है, जो एक–दूसरे को शत्रु बना देती है।

आज वर्तमान समय में सभी लोग अपने–अपने कार्यों में व्यस्त हैं, लेकिन हम सभी को ईश्वर के प्रति समर्पण भाव रखते हुए प्रतिदिन अवश्य ही कुछ समय निकालकर ईश्वर की उपासना दोनों समय प्रातः एवं सायं करनी चाहिए। यदि जीवन में सच्चा सुख और आनन्द प्राप्त करना चाहते हैं तो ईश्वर भक्ति आवश्यक है।

ऋग्वेद-1.4.6

उत नः सुभगाँ अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः।
स्यामेदिन्द्रस्य शर्माणि।।6।।

उत - भी, नः - हमारा, सुभगान् - प्रशंसाएँ (हमारे कार्यों और गुणों की), अरिः - शत्रुओं के द्वारा, वोचेयुः - गान हो, दस्म - सर्वोच्च स्वामी जो गलत कार्य करने वालों को दण्ड देता है, कृष्टयः - कड़ी मेहनत करने वाले बनो (प्रसन्नत और संतुलित मन से कार्य करो), स्याम - प्रेरणा तथा स्थापित, इत् - संकल्प के साथ, इन्द्रस्य - परमात्मा में, शर्माणि - स्थाई सुख।

व्याख्या :-

तीन महान् निर्देशों के परिणाम क्या होते हैं?

इस मन्त्र को इसी सूक्त के पांचवें मन्त्र के साथ समझना चाहिए। यदि हम आध्यात्मिक पथ पर प्रगति करने के लिए तीन महान निर्देशों का अनुसरण करें अर्थात् किसी की निन्दा न करें, समय और शक्ति का सदुपयोग करने पर ध्यान केन्द्रित करें और सदैव सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा की चर्चा करें तो हम एक ऐसा वातावरण बना सकते हैं जिसमें हमारे शत्रु भी हमारी प्रशंसा करेंगे और हमारा गुणगान करेंगे। दूसरों की गलतियाँ हमारी समस्या नहीं हैं। पूर्ण सक्षम परमात्मा प्रत्येक गलत कार्य करने वाले को दण्डित करता है। हमें तो केवल अपने कार्यों पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। हम संतुलित दिमाग से कड़ी मेहनत तभी कर सकते हैं जब हम निरर्थक कार्यों तथा चर्चाओं में शामिल न हों। इस प्रकार हम अपने आपको अपने संकल्प के साथ परमात्मा के स्थाई सुख में स्थापित कर पायेंगे।

जीवन में सार्थकता

स्थाई सुख की योजना क्या है?

तीन निर्देश :-

(1) किसी की निन्दा नहीं

(2) लाभदायक कार्यों पर ही समय और शक्ति का प्रयोग करना

(3) केवल सर्वोच्च शक्ति पर ही चर्चा करना।

तीन परिणाम :-

(1) आपके शत्रु आपकी प्रशंसा करेंगे

(2) आप संतुलित मन के साथ कड़ी मेहनत कर सकेंगे

(3) आपको आन्तरिक शक्ति का स्थाई सुख प्राप्त होगा।

सिद्धान्त :- केवल परमात्मा गलत कार्य करने वालों को दण्डित करता है, हम या हमारी चर्चाएँ नहीं।

Rigveda-1.4.6

उत नः सुभगाँ अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः।
स्यामेदिन्द्रस्य शर्माणि।।6।।

Ut nah subhagaan arirvocheyuhdasma krishtayah
Syaamedindrasya sharmaani.

Ut : Also, nah : our, subhagaan : praises (for our acts and virtues), arih : by enemies, vocheyuh : be sung, dasma : O! the Supreme Lord giving punishment to wrong-doers, krishtayah : be a hard working person (working with a happy and balanced mind), syaam : inspired and established, it : with determination, indrasya : in God's, sharmaani : permanent pleasure.

Elucidation

What are the results of three great instructions?

This verse is to be read with verse 5 of this sukta. If we follow three practical instructions to progress on spiritual path i.e. not criticizing others, focusing on utility of time and energy, always discussing about God, the Supreme Energy, we will be able to create an atmosphere where even our enemies would also appreciate us and sing songs in our glory. Wrongs of others are not our problems. The Almighty God punishes every wrong-doer. We should focus only on our acts. We can work hard with a balanced mind only if we don't involve in gossips and useless activities. This way we can establish our self in permanent pleasure of God with our determination.

Practical Utility in life

What is the plan for permanent pleasure?

Three requirement :

(i) No criticism

(ii) Focus on doing useful acts only.

(iii) Always discuss about Supreme Energy

Three results :

(i) Your enemies will praise you

(ii) You will become hard worker with balanced mind

(iii) You enjoy the permanent pleasure of your inner energy.

Principle : Only God punishes wrong-doers, not we or our comments.

स्वामी दयानन्द और हिन्दू समाज

स्वामी दयानन्द पर कुछ अज्ञानी लोग यह कहकर आक्षेप लगा देते हैं कि स्वामी जी ने हिन्दू समाज को संकीर्ण बना दिया। स्वामी जी पर यह आक्षेप निराधार है क्योंकि हिन्दू समाज तो पहले से ही इतना संकीर्ण हो चुका था कि उसमें और अधिक संकीर्णता लाने का स्थान ही नहीं रहा था। सनातन धर्म के प्रसिद्ध पंडित नेकीराम शर्मा ने तेज अख़बार 17 फरवरी 1926 को इस आशय की कुछ ऐसे स्वीकार किया था– 'जो धर्म कभी समस्त संसार का अद्वितीय और असीम धर्म था, आज वह सिकुड़ते सिकुड़ते कितने छोटे घेरे में परिमित कर दिया गया है। इसके विपरीत स्वामी दयानन्द ने हिन्दू समाज की संकीर्णता को दूर करने का जीवन भर प्रयास किया जो वेदों के ज्ञान को न जानने से और अन्धविश्वास और अज्ञान को मानने से हिन्दू समाज में समाहित हो गई थी। स्वामी जी ने किस प्रकार भगीरथ प्रयास कर हिन्दू समाज में नव जागृति लाने का प्रयास किया, आइये, इस पर एक संक्षिप्त दृष्टि डालें।

1. हिन्दू समाज ने शूद्रों को शिक्षा देने और वेद का सन्देश सुनाने का भी कड़ा निषेध कर दिया था। आधुनिक भारत में स्वामी दयानन्द ही प्रथम ऐसे उपदेशक हैं जिन्होंने शूद्रों को न केवल शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार दिलवाया, अपितु द्विजों के समान वेद को भी पढ़ने का अधिकार दिला कर हिन्दू समाज की संकीर्णता को दूर किया।

2. हिन्दू समाज शूद्रों के समान स्त्री जाति को भी शिक्षा से विमुख रखता था और उन्हें केवल गृह कार्य संतान उत्पत्ति और चूल्हे चौके तक सीमित रखता था। स्वामी दयानन्द ने न केवल प्राचीन विदुषी जैसे गार्गी और मैत्रयी आदि का उदाहरण देकर नारी जाति को शिक्षा का अधिकार दिलवाया अपितु उन्हें मातृ शक्ति के रूप में उचित सम्मान भी दिलवाया जिससे हिन्दू समाज की संकीर्णता दूर हुई।

3. हिन्दू समाज में बाल विवाह, वृद्ध विवाह, बहु विवाह और मिथ्या जाति–पाति के छोटे घेरे में विवाह करने की प्रथा थी। स्वामी दयानन्द ने ब्रह्मचर्य पूर्वक लड़का–लड़की का गुण–कर्म अनुसार, विस्तृत मानव समाज में सर्व विवाह और एक पति पत्नी व्रत का विधान करके हिन्दू समाज की संकीर्णता को दूर किया।

4. हिन्दू समाज में निर्दोष और अबोध बाल–विधवाओं को जन्म भर वैध्य के महा कष्ट प्रद जीवन में जबरदस्ती रखा जाता था। स्वामी दयानन्द के विधवा विवाह की शास्त्र और युक्ति के अनुसार सिद्ध करके इस वंश नाशक कुप्रथा को जड़ से उखाड़ दिया जिससे हिन्दू समाज की संकीर्णता दूर हुई।

5. हिन्दू समाज में जन्म मूलक या अनुवांशिक उच्चता के वृथा अभिमान से वंशानुगत वर्ण–व्यवस्था मानी जाने लगी थी। स्वामी दयानन्द ने मनुष्य मात्र को गुण–कर्म के अनुकूल वर्ण प्राप्ति का अधिकारी सिद्ध किया, जिससे हिन्दू समाज की संकीर्णता दूर हुई।

6. हिन्दू समाज में संगठन के विरोधी मिथ्या जाति–पाँति और छुआ–छूत के बंधन इतने दृढ़ और भयानक हो चुके थे ए जिन पर चलकर हिन्दू जाति अपने ही धर्म को मानने वालों हिन्दू भाइयों से पशु से भी बुरा व्यवहार करती हुई दिन. प्रतिदिन मिट्टी जा रही थी स्वामी दयानन्द ने झूठी जाति–पाति और छुआ–छूत के मानसिक रोग को वैदिक ज्ञान की औषधि से दूर करके उन्हें संगठित होने की शिक्षा दी जिससे हिन्दू समाज की संकीर्णता दूर हुई।

7. हिन्दू समाज ने भूल से वैदिक सार्वभौम धर्म का द्वार वैदिक धर्म से पतित हुए मनुष्यों तथा अहिंदुओं के लिए एकदम बंद करके अपने को तथा अपने धर्म को एक छोटे घेरे में सीमित कर दिया था। स्वामी दयानन्द ने देश सम्प्रदाय और वंश के बिना भेद भाव के प्रत्येक मनुष्य को उसका अधिकारी बतलाकर और सर्व साधारण को उसमें सम्मिलित होने का निमंत्रण देकर हिन्दू समाज की संकीर्णता को दूर किया।

8. हिन्दू समाज ने ज्ञान शून्य व्यर्थ कृपा–क्लाप और विश्वास को ही धर्म समझा जाता था और अपने गुरुओं की कृपा से ही मुक्ति का मिलना मानकर अपने आपको विवशता और दासता के जीवन में रखा जाता था। स्वामी दयानन्द ने मनुष्य मात्र के विचार और आचार की जन्मसिद्ध स्वतंत्रता की घोषणा करके सदाचार से आत्मज्ञान प्राप्ति के द्वारा मोक्ष का मिलना बतलाकर दासता के संकुचित जीवन से हिन्दू समाज को छुड़वाया।

9. हिन्दू समाज में वेद विरुद्ध यज्ञों और कल्पित देवताओं के नाम पर पशु. बलि ,माँस–भक्षण और मद्य आदि का धर्म समझकर उपयोग होने लग गया था। स्वामी दयानन्द ने वैदिक विधि का प्रचार करके प्राणी मात्र से अहिंसा पूर्वक वर्तने और स्वास्थ्य वह बुद्धि के नाशक नशों के भयानक दोषों को दूर करने का प्रयास किया जिससे हिन्दू समाज की संकीर्णता दूर हुई।

10. हिन्दू समाज में एक ईश्वर के स्थान पर अवतार गुरु पीर व पैगम्बर आदि की अनीश्वर तथा अनेक ईश्वर पूजा के रूप में मनुष्य पूजा का प्रचार हो गया था। स्वामी दयानन्द ने अवतार आदि उनकी मर्यादा के भीतर और अनेक ईश्वर के स्थान पर एक सच्चे सर्वव्यापक परमात्मा की सच्ची पूजा करनी सिखलाई जिससे हिन्दू समाज की संकीर्णता दूर हुई।

11. हिन्दू समाज में पारस्परिक घृणा फैलाने वाली छुआ–छूत के कारण एक साथ बैठ कर न खाना एक दूसरे के हाथ का न खाना आदि का झमेला आरंभ हो गया था। स्वामी दयानन्द चारों वर्णों को शुद्ध विधि से बने हुए भोजन के एक साथ बैठकर खाने का उपदेश देकर इस भ्रम की मिटाया जिससे हिन्दू समाज की संकीर्णता दूर हुई।

सारांश यह हैं कि जो हिन्दू अपने आधुनिक मार्ग–दर्शकों की संकीर्णता और अदूरदर्शिता से आत्मावलम्बन, आत्मरक्षा, सामाजिक संगठन, स्वतंत्रता, देश भक्ति और स्वराज्य आदि मानुषिक और जातीय श्रेष्ठ गुणों की अनुभूति खोकर मुर्दा के समान हो चुका था, वह स्वामी दयानन्द की जीवन प्रद शिक्षा से फिर से जीवित हो चुका है।

क्या यही संकीर्णता हैं, जिसे स्वामी दयानन्द ने हिन्दू समाज में पैदा कर दिया हैं, तब तो हमें ऐसी संकीर्णता पर अभिमान है।

होली का त्यौहार हमें बुराई पर अच्छाई की विजय को दर्शाता है

हम सभी को आपस में मिलकर भाई–चारे को बढ़ाना चाहिए और समाज के अन्तिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के जीवन में खुशियों का रंग भरने का प्रयास करना चाहिए

– फकीरे दयानन्द श्री एस.पी. कुमार

होली हमारे देश का एक प्रमुख त्यौहार है, जो बुराई पर अच्छाई की विजय और सामाजिक समरसता का प्रतीक माना जाता है। वहीं, आर्य समाज वेदों के शुद्ध ज्ञान और सत्य आचरण पर बल देता है।

बुराई पर अच्छाई की विजय – होली का त्योहार प्रह्लाद की भक्ति और हिरण्यकश्यप के अहंकार के नाश की कहानी से जुड़ा है। यह सत्य और धर्म की जीत का प्रतीक है। आर्य समाज सदैव से सत्य को स्वीकार करता है और ईश्वर भक्ति के लिए लोगों को प्रेरित करता है।

होली एवं अंधविश्वास के विरुद्ध संदेश – आर्य समाज मूर्ति पूजा और अंधविश्वास का विरोध करता है। अतः आर्य समाज होली को आडंबरों से मुक्त रखते हुए नैतिकता, सद्भाव और स्वच्छता पर ज़ोर देता है तथा आपसी भाई–चारे को मजबूत करने की बात करता है। मानव–मानव में भेद न करने की प्रेरणा देता है। एक दूसरे को आपसी सहयोग से आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। ऊच–नीच, गरीब–अमीर, छूत–अछूत की भावना से दूर रहकर कार्य करने की प्रेरणा देता है। हमें आपस में किसी भी व्यक्ति के प्रति भेदभाव व घृणा नहीं रखनी चाहिए अपितु एक–दूसरे के सुख–दुःख में सहभागी होने की प्रेरणा देता है। होली आपसी भाई–चारे को बढ़ावा देता है।

आर्य समाज के सिद्धान्त एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा से होलिका दहन के अवसर पर यज्ञ एवं हवन करके सम्पूर्ण संसार के कल्याण की प्रार्थना करते हैं। यज्ञ के द्वारा पर्यावरण की शुद्धि भी होती है और समाज में सकारात्मक ऊर्जा फैलती है।

आर्य समाज संगठन सैदव से जातिवाद, भ्रष्टाचार, छूआछूत एवं अन्य सामाजिक कुरीतियों का विरोध करता है। होली का त्यौहार भी सभी को जोड़ने का संदेश देता है। इस त्यौहार के दिन लोग आपसी वैमनस्य भूलकर प्रेमपूर्वक रंग खेलते हैं और आपस में खुशियों को बांटते हैं।

आजकल के समाज में पारंपरिक होली में लोग नशा, अश्लीलता और हुड़दंग करते देखे जा सकते हैं, जिसका आर्य समाज एवं सभ्य समाज विरोध करता है। आर्य समाज सदैव से ही सात्विक, संस्कारित एवं मर्यादित होली मनाने की प्रेरणा देता है।

आर्य समाज के दृष्टिकोण से होली केवल रंगों का त्यौहार नहीं, बल्कि आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने का अवसर है। इसे स्वच्छ, सात्विक और सद्भावपूर्ण तरीके से मनाना ही सही अर्थों में सार्थक होगा।

शुगर की आयुर्वैदिक औषधि का निःशुल्क वितरण
प्रत्येक रविवार को सत्संग के पश्चात् दोपहर 12 बजे से आर्य समाज भवन में शुगर की आयुर्वैदिक औषधि का निःशुल्क वितरण होता है। कृपया प्रातःकालीन समय में खाली पेट शुगर माप कर आयें।

Free Ayurvedic Eye Drops
Very costly drops prepared with medicinal water of Holy Mother Ganga, Saffron and other material. Made available with courtesy of Shri Subhash Garg ji.

फकीरे दयानन्द श्री एस पी कुमार
93 4225413 1

स्वामी भक्तानन्द सरस्वती
99683 57171

52, (Sy. No. 38), L.N. Pura, Adjacent to The Brilliant School, Behind Bata Showroom, ITPL Road, Kundalahalli Gate, Bangalore-560037